तात्पर्य

श्रीभगवान् परमात्मारूप में जीवमात्र के अन्तर्यामी हैं। इसका यह अर्थ नहीं कि वे बँट गए हैं। वास्तव में वे एकरूप ही हैं। इस सन्दर्भ में सूर्य का उदाहरण दिया जा सकता है। सूर्य अपने स्थान, मध्यान्ह-रेखा पर स्थित है। यदि कोई प्रत्येक दिशा में पाँच हजार मील तक भी जाकर सूर्य की स्थिति के सम्बन्ध में जिज्ञासा करे, तो सर्वत्र उसे यही उत्तर मिलेगा कि सूर्य सिर के ऊपर चमक रहा है। वेदों में इस उदाहरण से सिद्ध किया गया है कि विभागरहित एकरूप होते हुए भी श्रीभगवान् विभक्त हुए से प्रतीत होते हैं। शास्त्रों के अनुसार, एक विष्णु अपनी शक्ति से सर्वत्र व्यापक हैं, उसी प्रकार जैसे भिन्न-भिन्न व्यक्तियों को भिन्न-भिन्न स्थानों में सूर्य की प्रतीति होती है। प्राणियों के पालक होने पर भी यही परमेश्वर प्रलयकाल में सब का संहार करते हैं। इसका प्रमाण ग्यारहवें अध्याय में भी है—श्रीभगवान् का वाक्य है कि वे कुरुक्षेत्र में इकट्ठे सब के सब योद्धाओं को अपना ग्रास बनाने के लिए आए हैं। उनका स्वयं का वाक्य है कि कालरूप से वे सहार करते हैं। वे सब का संहार करने वाले हैं। सृष्टि के आदि में वे सम्पूर्ण प्राणियों को जन्म देते हैं और प्रलयकाल में संहार करते हैं। वैदिक मन्त्र के अनुसार वे सब जीवों के उद्‌गम और आश्रय हैं। सृजन के बाद, सब कुछ उनकी शक्ति के आश्रय में स्थित रहता है और विनाश होने पर फिर उन्हीं के आश्रय में लौट जाता है। यह सब वैदिक मन्त्रों द्वारा प्रमाणित है। **यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते येन जातानि जीवन्ति यत्प्रयन्त्यभिसंविशन्ति तद्ब्रह्म तद् विजिज्ञासस्व।** (तैत्तिरीय उपनिषद् ३.१)

ज्योतिषामपि तज्ज्योतिस्तमसः परमुच्यते।
ज्ञानं ज्ञेयं ज्ञानगम्यं हृदि सर्वस्य विष्ठितम्।।१८।।

ज्योतिषाम्=ज्योतिर्वानों का; **अपि**=भी; **तत्**=वह; **ज्योतिः**=ज्योतिस्त्रोत है; **तमसः**=माया रूपी अन्धकार से; **परम्**=परे; **उच्यते**=कहा गया है; **ज्ञानम्**=ज्ञानस्वरूपं; **ज्ञेयम्**=जानने के योग्य; **ज्ञानगम्यम्**=तत्त्वज्ञान से प्राप्त होने वाला; **हृदि**=हृदय में; **सर्वस्य**=सब के; **विष्ठितम्**=स्थित है।

अनुवाद

वह ज्योतिर्वानों की ज्योति का स्त्रोत है, माया के अन्धकार से अति परे अगोचर है। वही ज्ञानस्वरूप, जानने योग्य और तत्त्वज्ञान से प्राप्त होने वाला है। वह सब के हृदय में बैठा है।।१८।।

तात्पर्य

परमात्मा श्रीभगवान् सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र आदि ज्योतिर्वानों की ज्योति के उद्‌गम हैं। वैदिक-शास्त्रों में कथन है कि भगवद्धाम में सूर्य अथवा चन्द्रमा का कोई प्रयोजन नहीं है, क्योंकि वह श्रीभगवान् की प्रभा (ब्रह्मज्योति) से दीप्त है। प्राकृत-जगत में यह ब्रह्मज्योति महत्तत्त्व से ढकी रहती है; इसलिए यहाँ प्रकाश के लिए सूर्य,